रिकार्ड:- जो नां कबूं दरफाना. .... ओम शान्ती ✩ प्रातः क्लास 3-1-1967

मीठे-2 रूहानी बच्चों नें गीत की लाइन सुनी। जब कि बाप इतना जलवा दिखाते हैं तुम इतने हुसेन बन
जाओंगें तो फिर क्यों नहीं ऐसे बाप का बन जाना चाहिये। जो बाप श्याम सें सुन्दर बनाता है बच्चे समझते हैं
हम सांवरें सें गोरा बनतें हैं। एक की बात नहीं। वो तो कृष्ण को श्याम सुन्दर कह देतें हैं। चित्र भी ऐसे
बनाते हैं कोई सुन्दर कोई श्याम। मनुष्य समझते नहीं कि यह हो कैसे सकता है। सतयुग का प्रिन्स कृष्ण
सांवरा तो हो ना सकें। कृष्ण के लिये तो सब कहते हैं इन जैसा पति मिले, इन जैसा कृष्ण मिले। फिर वो श्याम
कैसे होगा। कुछ भी समझते नहीं हैं। इनको सांवरा क्यों बनाया है, कारण चाहिये नां। यह जो दिखाते हैं सर्प
पर डांसकिया.... ऐसी बात तो हो ना सकें। शास्त्रों में ऐसी-2 बातें सुन कर यहां भी कोई-2 की महिमा करने
लग पड़ते हैं कि इनको छोटेपन में सर्प भी नहीं डसता था। ऐसे कोई बातें हैं नहीं। चित्रों में दिखाते हैं
शेशनाग की सैया पर नारायण बैठे हैं। ऐसे कोई सर्प की शैस आद होती है क्या। इतने सैंकड़ों मुख होते
हैं क्या? कैसे-2 चित्र बैठ बनाये हैं। बाप समझाते हैं यह सब भक्ति मार्ग के वाहायात चित्र हैं। इनमें कुछ रखा
नहीं है। परन्तु यह भी ड्रामा में नूंध हैं। शुरू सें लेकर अब तक जो नाटक शूट हुआ है उनको फिर रिपीट
करना है। यह सिर्फ समझाया जाता है कि भक्ति मार्ग में क्या-2 करते हैं। कितना खर्चा करते हैं। आगें तो एक
पानी की लेक में बड़ा-2 चित्र नारायण का बनाते थे। आगें यह सब देखते थे तो इतना वण्डर नहीं खाते थे।
अब जब बाप नें समझाया है तब बुधी में आता है क्योंकर यह सब भक्ति मार्ग की बातें हैं। भक्ति मार्ग में
जो कुछ हुआ है सो फिर सें होगा। और कोई में भी फर्क समझ नहीं हैं। यज्ञ तप दान पुण्य आद कितना करते
हैं। प्रेयर करते हैं कि लड़ाई बन्द हो जावें। तुम तो जानते हो अनेक धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना
होनी ही है। इसमें तो बड़ा कल्याण है। अभी तुम यह प्रेयर आद नहीं करते हो। वो सब करते हैं भगवान सें
फल लेने लिये। भगवान का फल है जीवन मुक्ति। क्यों कि वाया मुक्ति सें जाना है जीवन मुक्ति में। तो यहां
सिर्फ समझाया जाता है कि भक्ति दुर्गती मार्ग है। बाकी होगा तो फिर भी ऐसे ही। तुम भी ऐसे ही भक्ति
मार्ग में फसेंगें। यथा राजा रानी तथा प्रजा कहा जाता है। यहां तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। कौरव,
कांग्रेस, ,यह तीनों अक्षर तुम लिख सक्ते हों। बोलो हम अक्षर ही गीता के लिखते हैं। गीता में है
नां भारतवासी कौरव, पाण्डव क्या करत भयें। क्योंकर इन्होनें मुसल निकालें अपने कुल का विनाश किया। यह सब
आपस में दुश्मन हैं। तुम अखबार यों न्यूज़ आद नहीं सुनते हो। जो सुनते हैं वो समझ सक्ते हैं कि दिन
प्रति दिन कितनी खिटपिट है। एक दो के कितने दुश्मन हैं। घर बैठे ही एक दो को उड़ा देंगें। तुम तो राज
योग सीख रहे हो। तो राजाई करने लिये पुरानी दुनिया की सफाई जरूर चाहिये। फिर नई दुनिया में सब कुछ
नया होगा सतोप्रधान। 5 तत्व भी सतोप्रधान होते हैं। समुंद्र की ताकत नहीं जो उछल दे नुकसान करें। अभी तो
इन पांच तत्वों के भी कितने विघन पड़ते हैं। वहां तो प्रकृती दासी हो जाती है। इसलिये दुख की कोई
बात नहीं। यह भी बना बनाया ड्रामा का खेल है। स्वर्ग कहा जाता है सतयुग को। क्रिश्चन लोग भी
कहते हैं पहले-2 ही था। भारत है अविनाशी खंड। सिर्फ उनको पता नहीं है कि हमको लिबरेट करने वाला बाप
भारत में ही आता है। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। तो भी समझते नहीं हैं। अभी तुम समझा सक्ते हो। भारत
में शिव जयन्ती मनाई जाती है जरूर शिव बाबा नें भारत में ही आकर भारत को फिर से सतयुग (हेवन)
बनाया था। अब फिर बना रहे हैं। जो प्रजा बनने वालें होंगें उनकी बुधी में कुछ बैठेगा। आनें वालें ही नां होंगें
तो कुछ भी समझेंगें नहीं। जो इस राजधानी के होंगें वो समझेंगें क्योंकर हम शिव बाबा के बच्चे हैं, लिबरेटर
ज्ञान का सागर शिव बाबा है। ब्रह्मा को नहीं कहेंगें। ब्रह्मा भी इनसें लिबरेट होतें हैं। सबको एक बाप
ही लिबरेट करते हैं। क्यों कि तमोप्रधान है। ऐसे-2 अन्दर में विचार सागर मथन करना चाहिये। हम मुरली ऐसे
चलावेंगें जो मनुष्य झट समझ जावें। नारायण तो वर्ते हैं नां। यह है [illegible]। इसकी तो रोज हटरी करनी चाहिये

छूट कर आये। फिर उनका

हंगामा होने से कितने दुश्मन बन पड़े। पहले तो उनको ज्ञान बहुत अच्छा। यह नही समझते, कि परमात्मा
ज्ञात मिली हुई है। अभी भी बहुत ऐसे समझते हैं कि कुछ शक्ति है। गीता पुस्तक उठाये सुनाते
प्रवेशता है। कुछ ताकत है। आजकल तो रिधी सिधी की ताकत तो बहुतों में है। मुझे ही भक्ति मार्ग में
है। बाप कहते है यह सब भक्ति मार्ग की पुस्तकें है। ज्ञान का सागर तो मैं हूं। भक्ति मार्ग वालों को भी
याद करते है। ड्रामा प्लान अनुसार यह भी ड्रामा में नूंध है। सा० भी होते हैं। फिर भी उससे मनुष्य सुधरते तो हैं नां।
भी करते हैं। ज्ञान नही उठाते हैं उनके लिये भक्ति ही अच्छी। कब कोई उल्टी बात नही कहेगें। फिर भी भक्त हैं।
भी आद नही करेंगें। भगवान का भजन करनें वालें लियें कब कोई उल्टी वात नही कहेगें। फिर भी भक्त हैं।
परन्तु आजकल भले भक्त है तो भी झूठ डेवाला मार देते है। ऐसे थोड़ेई भक्त डेवाला नही मार सकते है।
व्यवहार में तो डेवाला आद मारते ही है। ज्ञान में आनें से भी डेवाला मार देतेहैं। ऐसे नही कि शिव वावा
का बच्चा बना हूं तो डेवाला नही मारेंगें। इससें ज्ञान का कोई तीलक नही है। समझते हम वावा के लिये
धन्धे आद करते है जो कुछ होगा वावा को देगें। वावा ऐसी वातें कब सुनते हीनही है। वावा की क्या
परवाह रखी है इन वातों की। शाहों के शाह की हुण्डी तो कैसे भी सकरीनें जावेंगी। सब कुछ हो ही रहा है।
ऐसे थोड़ेई है कि स्थापना में कुछ विघ्न पड़ते है। तुम बच्चे सर्विस पर लगे हुये हो कितने बच्चे पैदा होते है
समझते है श्रीमत पर सर्विस में लगनें सें फल पावेंगें। हमको तो सब कुछ वहां ट्रान्सफर करना है। वेग वैगेजु
सब कुछ ट्रान्सफर कर देना है। वावा नें सब कुछ ट्रान्सफर कर दिया नां। वावा को शुरू में मजा वहुत आया
था। वहां सें जब निकला तो एक गीत बनाया था। अलफ को अल्लाह मिला, वे वादशाही सब, भागीदार को
दे दिया। राजाई में चलतें थे। श्याम होती थी और घूमनें फिरनें चलें जाते थे। भागीदार थे। समझते थे फकीर मैं
~~इतना काम नही करेगें भागीदार में काम अच्छा करेंगें~~। तो अपनें को स्वतन्त्र रख दिया। संस्कार ही ऐसे थे।
फिर तो देखा वाहर राजाई मिलती है, एक टेडी पगड़ी वाले का, एक चत्रभुज का सा० किया। सच्चा दवारका
का वादशाह बनूंगा। ऐसे नशा चढ़ता था। अभी यह विनाशी पैसे क्या करेगें। तुम बच्चों को भी खुशी होनी चाहियें
नां। हमको वावा स्वर्ग की वादशाही दे रहे है। बच्चे इतना पुरूषार्थ नही करते हैं। चलते-2गटर में गिर पड़ते
हैं अच्छे-2बच्चे निमन्त्रण देनें वालें, कब बाप को याद नही करतें। वावा के पास तो पत्र आना चाहियें नां,
वावा हम वहुत खुश है। आपकी याद में मस्त रहते है। वहुत है जो कब याद भी नही करतें है। याद की
यात्रा सें ही खुशी जोर की चढ़ेगी। ज्ञान में भलें कितना भी मस्त रहतें हो परन्तु देहअभिमान कितना है।
देहीअभिमानी बना कहां। ज्ञान तो बड़ा इजी है। योग में ही माया विघ्न डालती है। गृहस्थ व्यवहार में भी
अनासक्त होकर रहना है। ऐसे नां हो माया अंगुली लगा दे। माया काटती ऐसे है जैसे चूहा। चूहा काटता ऐसे
है जो खून निकल आता है तो भी पता नही पड़ताहै। बच्चों को भी पता नही पड़ता है। देहअभिमान में
फंसनें सें हमारी कितनी दुर्गती हो जावेगी। ऊंच पद पा नही सकेंगें। वाप सें तो पूरा वर्सा लेना चाहियें नां
जैसा वाप। मुआफिक हम भी तख्त नशीन वनें। वाप है दिल लेनें वाला। दिलवाला मन्दिर पूरा यादगार है।
अन्दर हाथी पर महारथी बैठे हुये है। तुम्हारे में भी महारथी घोड़ें स्वार प्यादे है। हर एक को अपनी नब्ज
देखनी है। वावा क्यों देखें। तुम अपने को देखो हम कितना वाप को याद करते है। और वाप की सर्विस
हमारा वाप के साथ योग है। रात को जागकर वाप को याद करते हैं। हम बहुतों की सर्विस कर रहे है?
रखना चाहिये नां। वाप को हम हर घड़ी कितना समय याद करते हैं। वहुत है जो समझते है हम तो निरन्तर
याद करते रहते है। परन्तु यह हो नही सकता। कोई समझते है हम तो शिव वावा का बच्चा हूं नां। परन्तु
तो अपने को आत्मा समझ वाप को याद करना है। वाप के डायरेक्शन विगर कुछ करते हैं तो गोया याद
नही करते है। वाप की याद में सदैव हर्षित मुख रहना चाहिये। भुलाया हुआ नही। याद में रहने वाले

हर्षित मुख

मुख हर्षित रहेगा।खुशी में किसीको भी बहुत रमणीकता से समझावेंगे।मस्त रहेंगी।वो भी बहुत थोड़े हैं जो सर्विस पर तत्पर रहते है।हुक्म भी क्यों करें।सुना फलानी जगह प्रदर्शनी है झट भागना चाहिये।बावा को लिख दी ट्याबा हम जाते है फलानी जगह।फिर बाबा देखेंगे दरकार नही है तो लिख देगें थोड़ा ठहरो।सर्विस का बड़ा शौक रहना चाहिये।हम जाकर प्रोजेक्टर पर वा प्रदर्शनी पर समझाते है।चित्रों पर समझाना तो बहुत सहज है।यह है ऊंच ते ऊंच भगवान फिर इनकी है रचना।ब्रदर हुड को इन्होंने फादर हुड कर दिया है।

पहले-2 तो शिव के चित्र पर ही समझाना चाहिये।यह है सभी आत्माओं का बाप। सभी का परम-पिता-परम-आत्मा।निराकार।हम आत्मा भी निराकार है।गाया भी जाता है आत्मा स्टार भृकुटी के बीच रहती है।शिव बाबा भी स्टार है।मनुष्य जो समझते है अंगुष्ठे मिसल है, ऐसे नही है।आत्मा है ही स्टार ।अगर इतनी बड़ी चीज होती गोड़ा हो जावें।इसी मुरली में यह कह देना चाहिये।कहते है ब्रहमाण्ड।अर्थात अण्डे सब ब्रहम तत्व में रहते है।परन्तु अण्डे जितना नही है।यह तो स्टार है।परन्तु स्टार की पूजा कैसे हो, इसलिये बड़ा बनाते है।बाकी आत्मा कोई बड़ी नही है।आत्मा स्टार मिसल है।इसआत्मा में ही 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है।84लाख तो हो नही सकते।मनुष्य कोई जानवर नही बनते है।आत्मा कब 84 लाख जन्म नही लेती।यह ब्राप बैठ समझाते है।आत्मा पहले नगीं आती है फिर शरीर धारण कर पार्ट बजाती है।सतोप्रधान आत्मा पुनर्जन्म ले-2 आयरन ऐज में आ जाती है।बाद में आनें वाले तो 84जन्म नही लेंगे।सभी तो 84जन्म ले ना सकें।समझते हो?अगर समझते हो तो सब कहो हाँ हम समझते है।नही तो फिर हम समझावें।अब समझाओ आत्मा में पार्ट भरा हुआ है।आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है।नाम रूप देश काल सब फिर जाता है। ऐसे-2 भाषण करना चाहिये?कहते भी है सेल्फ रियेलाईजेशन।परन्तु कौन करावें?आत्मा को परमात्मा कहना यह कोई सेल्फ रियेलाईजेशन हुई क्या?अब समझा?नोट करो।यह नई नालेज है।बाप जो ज्ञान का सागर, सर्व का सदगती दाता गॉड फादर, पतित पावन है वो हमको समझाते है।फिर उनकी खूब महिमा करो। अब उनकी महिमा सुनी?आत्मा का परिचय बताया अब परमात्मा का भी बताते है।उनको भी कहा जाता है परम-पिता परम-आत्मा-माना परमात्मा।आत्माओं का बाप भी वैसा ही होगा ना।वो फिर छोटा वा बड़ा तो हो ना सके।परमआत्मा माना परमात्मा।सुप्रीम सोल।सोल माना परमात्मा नही कहेंगे।सोल माना आत्मा।परम-पिता परम आत्मा।वो परे ते परे परमधाम में रहने वाली है।वो पुनर्जन्म में नही आते है।इसलिये उनको परमपिता परम आत्मा कहा जाता है।इतनी छोटी आत्मा में ही इतना पार्ट भरा हुआ है।पतित पावन भी उनको कहा जाता है।उनका नाम एक ही शिव है।शिव बाबा कहते है।रूद्र बाबा नही कहेंगे।नाम एक ही है शिव बाबा।चित्र एक ही है।भक्ति मार्ग में सिर्फ नाम अनेक रख देते है।अच्छा अब यह समझा परमपिता परमात्मा क्या है?वो ज्ञान सागर है उनको ही सब याद करते है कि हे पतित पावन आकर पावन बनाओं। तो जरूर आना पड़े।वो आते है तब जब कि एक धर्म की स्थापना करनी होती है।आदी सनातन प्राचीन है ही देवी देवता धर्म।अभी तो है कलियुग।कितने ढ़ेर मनुष्य है।नई दुनिया सतयुग में बहुत थोड़े होंगे।गाया हुआ भी है ब्रहमा दवारा स्थापना ।शंकर दवारा पुरानी दुनिया का विनाश।यह वो ही महाभारत लड़ाई का समय है।क्योंकि गीता दवाराही आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हुई है।सिर्फ उसमें भूल कर दी है कृष्ण नाम डाल दिया है।कृष्ण तो है नम्बरवन रचना।रचता तो मैं परमपिता परमात्मा ही हूँ।मै तो पुनर्जन्म रहित हूँ।वो पूरे 84जन्म लेनें वाले उनको फिर परमात्मा कैसे कह सकते है।अब जज करो परमपिता परमात्मा निराकार शिव ठहरा या कृष्ण ठहरा।बाप कौन ठहरा?गीताका भगवान कौन?भगवान शिव को कहेंगे या कृष्ण को।भक्ति मार्ग के शास्त्रों में कितना उल्टा लिख दिया है।भगवान तो एक को कहा जाता है।फिर अगर इन बातों को कोई नहीं मानें तो समझ जावेंगे यह आदी सनातन देवी देवता धर्म के नही है।सतयुग में आनें वाले झट मानेंगे।और पुरूषार्थ भी करेंगे।मूल बात ही यह है।इसमें ही तुम्हारी विजय होनी है। अचछा गुड मॉर्निंग